राजनीति स्वार्थों के घेरे में

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

शासन करने की अनेक पद्धतियां देश में प्रचलित हैं। प्राचीनकाल में प्रायः राजतन्त्रात्मक पद्धति से देश संचालित होता था। किन्तु धीरे–धीरे समय परिवर्तित हुआ और यह अनुभव किया जाने लगा कि ऐसी पद्धति होनी चाहिए। जिसमें सबकी भागीदारी सुनिश्चित की जा सके। इसलिए प्रजातन्त्रात्मक शासन पद्धति को हमारे देश में स्वीकार किया गया। यह एक ऐसी पद्धति हैं जिसमें सबका कल्याण निहित है। विश्व के प्रत्येक देशों में भिन्न–भिन्न प्रकार की शासन प्रणालियां प्रचलित है। प्राचीनकाल में प्रायः राजतन्त्र था। किन्तु समय के परिवर्तन के साथ शासन प्रणालियां भी बदली। इन सभी शासन प्रणालियों में प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली सबसे अच्छी प्रणाली मानी गयी है। राजतन्त्रात्मक शासन प्रणाली में वंशानुगत रूप से योग्यता और अयोग्यता का ध्यान किये बिना राजा का पुत्र ही राजा होता था। किन्तु प्रजातन्त्रात्मक शासन प्रणाली ऐसी नहीं है। आज के युग में प्रजातन्त्र को शासन की सबसे अच्छी प्रणाली माना गया है। प्रजातन्त्र का अर्थ है प्रजा का, प्रजा के लिए और प्रजा द्वारा शासन करना। इस प्रणाली में शासन प्रजातन्त्रात्मक ढंग से होता है। सरकारों का चुनाव पांच वर्षों के लिए होता है। यदि सरकार पांच वर्ष में अच्छा कार्य नहीं करती तो जनता को उसे हटा देने का अधिकार होता है। इसलिए प्रजातन्त्र एक ऐसे तन्त्र का नाम है जिसमें शासन को महत्व प्रदान न करके उसके कार्यों को महत्व प्रदान किया जाता है। इसके अन्तर्गत जनता का हित सर्वोपरि होता है। इसमें कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को साकार किया जाता है। इस प्रकार प्रजातन्त्र जनता को पूर्ण स्वतन्त्रता एवं आत्मगौरव प्रदान करने वाली शासन व्यवस्था है। लेकिन धीरे–धीरे कुछ स्वार्थी राजनितिज्ञों ने इसका अनुचित लाभ लेना प्रारम्भ कर दिया। जिससे यह पद्धति भी स्वार्थों के घेरों में आ गयी। भाई, भतीजावाद, परिवारवाद, स्वार्थवाद और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलने लगा। तर्क, कुतर्क के माध्यम से लोग अपनी ही बात को सत्य मानने लगे और दुसरों की बातों पर ध्यान नहीं दिया जाने लगा। इसका परिणाम यह हुआ कि राजनीति विकृति होती गयी और शासन की यह पद्धति भी दोषों से व्याप्त हो गयी।

राजनीति में चरित्रवान, ईमानदार और स्वक्ष छविवाले लोग यदि आते हैं तो कोई भी पद्धति अच्छी रहती है, किन्तु जब भ्रष्टाचारी, बाहुबली और माफिया गिरोह राजनीति में संरक्षण पाने लगता है तो राजनीति स्वार्थों के घेरे में आ जाती है। राजनेता आजकल स्वार्थनीति को ही धर्मनीति मान रहे हैं, किन्तु प्राचीनकाल में ऐसा नहीं था। अयोध्या के राजा दशरथ ने प्राण जाय पर वचन न जाई के सिद्धान्त का पालन करते हुए राजनीति में जन–कल्याण की एक ऐसी लकीर खींच दी जिससे राम–राज्य की स्थापना हुई। कुछ स्वार्थी, कुछ चरित्रहीन लोग राजनीति में होते है। जिन्हें नियन्त्रित करने के लिए दण्डनीति आवश्यक होती है। भारत सबसे बड़ा प्रजातन्त्रात्मक देश है। यहां पर संविधान सर्वोपरि है। स्वतन्त्र न्यायपालिका कि स्थापना की गई है। निःस्वार्थ भाव से जन कल्याण के लिए कार्य करने की प्रेरणा संविधान में दी गई है। प्रजातन्त्र को यदि स्वस्थतन्त्र बनाना है तो न्यायपालिका, व्यवस्थापिका और कार्यपालिका में चरित्रवान लोगों का होना बहुत आवश्यक है। व्यवस्थापिका कानून बनाती हैं, कार्यपालिका उसे लागू करती हैं, और न्यायपालिका यह देखती हैं कि जो कानून बनाया गया हैं उसमें कोई कमी तो नहीं रह गयी है। यदि कानून में कोई कमी रहती हैं तो व्यवस्थापिका को सलाह देकर इसे सुधरवाने का कार्य करती है। भ्रष्टाचार, भाई–भतीजावाद, घूसखोरी आदि कुछ ऐसी विकृतियां राजनीति में आ गई है। जिससे राजनीति दूषित हो गई है। राष्ट्रहित के स्थान पर आजकल राजनेता स्वहित को महत्व दिया करते है। हर क्षेत्र में भ्रष्टाचार व्याप्त हो गया है। जनता का विश्वास ही राजनीतिज्ञों से टूट गया है। जो धन राष्ट्रहित के कार्यों में खर्च करने के लिए सरकार से दिया जाता हैं उसका आधा भाग लूट–खसोट में ही समाप्त हो जाता है। जो धन शेष बचता है उससे जो कार्य होता है वह आधा अधूरा ही होता है। इन्हीं सब कारणों से सड़क बनने के कुछ समय बाद ही सड़क टूट जाती है। पुल बनते–बनते ही टूट जाता है। सड़कों पर आये दिन दुर्घटनायें होती रहती हैं। इससे धन–जन की हानि होती है। राजनीति में जो मूल्य प्रतिष्ठापित होने चाहिए थे वही आज नष्ट हो गये हैं।

प्रजातन्त्र स्वच्छ तन्त्र तभी बन सकता है जब शासक से लेकर प्रजा तक अपनी ईमानदारी का परिचय दे। प्रजातन्त्र बहुदलीय प्रणाली का तन्त्र होता है। प्रजातन्त्र में विपक्ष का मजबूत होना बहुत आवश्यक है। कई बार ऐसा होता है कि किसी भी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिल

पाता। ऐसी स्थिति में समान विचारधारावाले दल मिलकर सरकार बनाते हैं। साक्षा सरकारें कई बार अपने पंचवर्षीय कार्यकाल को भी पूरा नहीं कर पाती। चुनाव में खड़े होने वाले प्रत्याशी कभी–कभी स्वार्थवश कार्य करते हैं। ऐसे प्रत्याशियों से जनता के हित की आशा नहीं की जा सकती। चुनाव के समय राजनेता लोग अनैतिक साधनों को अपनाते है। जिसका परिणाम है कि भारत में जातिवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, महंगाई आदि अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए ऐसे प्रत्याशियों का चयन जरूरी है जो सच्चरित्र और ईमानदार हों तथा प्रजातन्त्र में जिनका पूरा विश्वास हो।